हिंदी 'ब'

अति-संभावित प्रश्न-पत्र

1

अभ्यास प्रश्न-पत्र

सी.बी.एस.ई, कक्षा X परीक्षा

समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

1. *इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं-क, ख, ग और घ।*
2. *चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।*
3. *यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।*
4. *एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।*
5. *दो अंको के प्रष्ठनों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।*
6. *तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।*
7. *पाँच अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।*

खंड 'क' अपठित बोध — 10 अंक

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- **[10]**

हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम वस्तु एक बार हँस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हँसो और पेट फुलाओ। हँसी कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों पर खीझने वाला **हेरीक्लेस** बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन **डेमाक्रीट्स** 109 वर्ष तक जिया। हँसी-खुशी का नाम जीवन है। जो रोते हैं उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है-'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।' मनुष्य के शरीर के वर्णन पर एक विलायती विद्वान ने पुस्तक लिखी है। उसमें वह कहता है कि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है जो कि शोक और दु:ख की दीवारों को ढहा सकता है। प्राण रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम-से-उत्तम उपाय मनुष्य के चित्त को प्रसन्न रखता है। सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंदरूपी मंत्र सुनाता है।

एक अंग्रेज डॉक्टर कहता है कि किसी नगर में दवाई लदे हुए बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है।

(क) हँसी भीतरी आनंद को कैसे प्रकट करती है? **[2]**

(ख) पुराने समय में लोगों ने हँसी को महत्व क्यों दिया? **[2]**

(ग) हँसी को एक शक्तिशाली इंजन के समान क्यों कहा गया है? **[2]**

(घ) हेरीक्लेस और डेमाक्रीट्स के उदाहरण से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहता है? **[2]**

(ङ) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। **[1]**

(च) आनंद कैसा इंजन है? **[1]**

2. पद की परिभाषा लिखिए। रेखांकित, शब्द है या पद? **[1]**
कमरा ठंडा है।

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16 अंक

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- **[1 × 3 = 3]**

(क) आलोक ने कहा कि वह परीक्षा नहीं देगा। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

(ख) नदी में बाढ़ आने पर गाँव के लोग परेशान हो जाते हैं। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ग) जो सोता है सो खोता है। (सरल वाक्य में बदलिए)

4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

(क) निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए- **[1 × 2 = 2]**

(*i*) अन्नजल (*ii*) समाचार-वाचन

(ख) निम्नलिखित शब्दों को समस्त-पद बनाकर समास का नाम लिखिए- **[1 × 2 = 2]**

(*i*) गंगा का जल (*ii*) चंद्र जैसा मुख

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए: **[1 × 4 = 4]**

(क) फलों का रस मेरे को नहीं पीना।

(ख) कृपया आप यहाँ से जाने की कृपा करें।

(ग) हमारे घर में आज बहुत सा मेहमान आया है।

(घ) उसे बैंक से रुपए निकालने चाहिएँ।

6. निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए- **[1×4 = 4]**
जिगर के टुकड़े-टुकड़े होना, आग बबूला होना, कोल्हू का बैल, जान पर खेलना

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 28 अंक

7. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 30-40 शब्दों में लिखिए- **[2 + 2 + 2 = 6]**

(क) 'चाजीन' किसे कहते हैं? 'झेन की देन' पाठ में चाजीन में कौन-सी क्रियाएँ पूरी कीं। **[2]**

(ख) काठगोदाम के पास भीड़ क्यों इकट्ठी हो गई थीं? **[2]**

(ग) तताँरा वामीरों की मृत्यु को त्यागमयी क्यों कहा गया है? **[2]**

(घ) धर्म तल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया? **[2]**

8. जापान में मानसिक रोग के क्या कारण बताए गए हैं? उससे होने वाले प्रभाव का उल्लेख करते हुए लिखिए कि इसमें 'टी सेरेमनी' की क्या उपयोगिता है? 80-100 शब्दों में लिखिए। **[5]**

अथवा

तताँरा-वामीरो की मृत्यु कैसे हुई? पठित पाठ के आधार पर 80-100 शब्दों में लिखिए।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं तनी प्रश्नों के उत्तर 30-40 शब्दों में लिखिए- **[2 + 2 + 2 = 6]**

(क) कबीर की साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है? **[2]**

(ख) 'पावस' में गिरि का गौरव कौन गा रहा है और उत्तेजना का संचार वह कैसे कर पाता है? **[2]**

(ग) 'मुँह बंद होना' मुहावरा 'तोप' कविता में क्या लाक्षणिक अर्थ बताता है? **[2]**

(घ) चाकरी से मीरा को क्या लाभ मिलेगा? **[2]**

10. मीराबाई श्री कृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या करने को तैयार हैं? (80-100 शब्दों में लिखिए) **[5]**

अथवा

सिद्ध कीजिए कि सुमित्रानंदन पंत कल्पना के सुकुमार कवि हैं? (80-100 शब्दों में लिखिए)

11. (क) अंत में हरिहर काका द्वारा जमीन के संदर्भ मे लिया जाने वाला निर्णय क्या था और वह परिवार के मूल्यों को किस परिस्थिति में प्रभावित करता है और कैसे? यह स्थिति हर व्यक्ति को क्या संदेश प्रदान करती है? **[3]**

(ख) 'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर पी.टी. सर की किन्हीं तीन चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **[3]**

खंड 'घ' लेखन — 26 अंक

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 80-100 शब्दों का अनुच्छेद लिखिए-

(क) बढ़ता आतंकवाद: एक चुनौती **[6]**
- आतंकवाद की तह में कारण
- भारत की भयावह स्थिति
- आतंकवाद से प्रभावित विभिन्न क्षेत्र

(ख) मेरे जीवन का लक्ष्य या उद्देश्य
- लक्ष्य का निश्चय
- लक्ष्यपूर्ण जीवन के लाभ
- लक्ष्यपूर्ति का प्रयास

(ग) हिंदी दिवस
- भारत की अनेक भाषाएँ
- स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी
- हिंदी की क्षमता

13. जल बोर्ड के अध्यक्ष को पत्र लिखकर अवगत कराइए कि आपके नल में गंदा पानी आने लगा है, इसका निराकरण शीघ्र किया जाए। **[5]**

अथवा

विद्यालय के गेट पर मध्यावकाश के समय ठेले और रेहड़ी वालों द्वारा जंक फूड बेचे जाने की शिकायत करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर उन्हें रोकने का अनुरोध कीजिए।

14. विद्यालय में साहित्यिक क्लब के सचिव के रूप में प्राचीर पत्रिका के लिए लेख, कविता, निबंध आदि विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत करने हेतु सूचना पट के लिए एक सूचना लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए। **[5]**

अथवा

नवयुग अपार्टमेंट के सचिव होने के नाते लोगों को जल संरक्षण के प्रति सचेत करते हुए 40-50 शब्दों में सूचना लिखिए।

15. गर्मी की छुट्टियों मे घूमने जाने की ज़िद कर रहे बच्चे व माँ के बीच लगभग 50 शब्दों में संवाद लिखिए। **[5]**

अथवा

अपने सहपाठी से कक्षा कार्य पूछने हेतु उससे होने वाले संवाद को लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

16. अपने पुराने मकान का विवरण देते हुए उसकी बिक्री के लिए लगभग 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए। **[5]**

अथवा

जमीन विक्रय के संबंध में किसी अखबार के वर्गीकृत कॉलम हेतु 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए।

● ●

हिंदी 'ब'

अतिसंभावित प्रश्न-पत्र 1

उत्तरमाला

सी.बी.एस.ई, कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध — 10 अंक

1. (क) हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। हम जब हँसते हैं तब हमारे मन का आनंद प्रकट होता है। यह आनंद ही हँसी के रूप में प्रस्फुटित होता है। हँसी तभी आती है जब हमारे मन में खुशी होती है। **[2]**

(ख) पुराने समय के लोगों ने हँसी को इसलिए महत्व दिया कि उनका मानना था कि हँसने से आयु बढ़ती है- पुराने लोग कहते थे कि जितना अधिक आनंद से हँसोगे, उतनी ही आयु बढ़ेगी। वे कहते थे- हँसों और पेट फुलाओ। **[2]**

(ग) हँसी को एक शक्तिशाली इंजन के समान इसलिए कहा गया है क्योंकि हँसी के वेग से शोक और दु:ख की दीवारों को ढहाया जा सकता है, हँसी में भी इंजन जैसी प्रबल क्षमता है। **[2]**

(घ) हेरीक्लेस और डेमाक्रीटस के उदाहरण के माध्यम से लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति लंबे समय तक जीता है, जबकि रोने और चीखने वाला जल्दी मरता है। जिंदा दिली से व्यक्ति को लंबी आयु प्राप्त होती है। **[2]**

(ङ) हँसी का महत्व **[1]**

(च) आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है जो कि शोक और दुख की दीवारों को ढहा सकता है। **[1]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण — 16 अंक

2. वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है। यह पुस्तक उधर रख दो। रेखांकित शब्द पद है। **[1]**

3. (क) मिश्र वाक्य **[1]**

(ख) नदी में बाढ़ आती है इसलिए / और गाँव के लोग परेशान हो जाते हैं। **[1]**

(ग) सोने वाला खोता है। **[1]**

4. (क) (i) अन्न और जल - द्वंद्व समास

(ii) समाचार का वाचन - तत्पुरुष समास

(ख) (i) गंगाजल - तत्पुरुष समास

(ii) चंद्रमुख - कर्मधारय समास **[2 + 2 = 4]**

5. (क) मुझे फलों का रस नहीं पीना। **[1]**

(ख) कृपया आप यहाँ से जाएँ / आप यहाँ से जाने की कृपा करें। **[1]**

(ग) हमारे घर में आज बहुत-से मेहमान आए हैं। **[1]**

(घ) उसे बैंक से रुपए निकालने चाहिए। **[1]**

6. जिगर के टुकड़े-टुकड़े होना- (दिल का टूट जाना) एक पिता के कंधे पर जब उसके पुत्र की अर्थी निकलती है तो उसके जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। **[1]**

आग बबूला होना- (क्रोधित होना) अपने पुत्र की धृष्टता पर पिता आग बबूला हो उठे। **[1]**

कोल्हू का बैल- (बहुत अधिक मेहनती) रमेश ने अपनी बहन को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए कोल्हू के बैल की तरह काम किया। **[1]**

जान पर खेलना- (प्राणों को संकट में डालना) भारतीय सैनिक अपनी जान पर खेलकर भी अपनी मातृभूमि की रक्षा करते है। **[1]**

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक **28 अंक**

7. (क) जापानी टी सेरेमनी (चा-नो-यू) में विधिपूर्वक चाय पिलाने वाला

अतिथियों का स्वागत, अँगीठी सुलगाना, तौलिए से बरतन साफ़ करना, चाय बनाना और उसे प्यालों में डालना आदि। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2017) [2]**

व्याख्यात्मक हल: जापानी टी सेरेमनी (चा-नो-यू) में विधिपूर्वक चाय पिलाने वाले को चाज़ीन कहते हैं। चाज़ीन ने अतिथियों का स्वागत किया। उसने कमर झुकाकर प्रणाम किया, बैठने की जगह दिखाई, अँगीठी सुलगाना, तौलिए से बरतन साफ करना, चाय बनाना और उसे प्यालों में डालना आदि क्रियाएँ पूरी कीं।

(ख) काठगोदाम में एक कुत्ता तीन टाँगों के बल रेंगते हुए आया। उसके पीछे-पीछे दौड़ते हुए एक व्यक्ति द्वारा कुत्ते की पिछली टाँग पकड़े जाने के कारण कुत्ता किकियाने लगा। अत: कुत्ते के किकियाने और व्यक्ति की चीख पुकार से भीड़ इकट्ठी हो गई थी। **[2]**

(ग) तताँरा वामीरो की मृत्यु को त्यागमयी इसलिए कहा गया है क्योंकि उन्होंने सच्चे और गहरे प्रेम के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। **[2]**

(घ) धर्म तल्ले के मोड़ पर आकर जूलूस इसलिए टूट गया। क्योंकि सुभाष बाबू को पकड़ कर गाड़ी में बैठाकर लॉकअप में भेज दिया गया। स्त्रियाँ जुलूस बनाकर वहाँ से आगे चली तो बहुत भीड़ एकत्रि हो गई थी। तब पुलिस ने लाठी चार्ज शुरू कर दिया परिणाम स्वरूप 50-60 स्त्रियाँ वहीं बैठ गईं और उन्हें पकड़कर पुलिस लाल बाजार ले गई थी। **[2]**

8. जापान में मानसिक रोग के जो कारण बताए गए हैं, उनमें प्रमुख कारण जापानियों की आर्थिक प्रगति के लिए अमेरिका से प्रतिस्पर्धा की भावना है। इसीलिए उनका यह प्रयत्न रहता है कि वे एक महीने का काम एक दिन में पूरा कर लें। परिणामस्वरूप उनके जीवन की रफ़्तार अधिक बढ़ जाती है व उन्हे मानसिक रोग हो जाते हैं और वे तनावपूर्ण जीवन जीने के लिए विवश हो जाते हैं।

'टी-सेरेमनी' चाय पीने की एक विधि है। चाय पीने के पश्चात् दिमाग की रफ़्तार धीमी पड़ जाती है और तनाव से मुक्ति भी मिलती है, समय के प्रति एक नए दृष्टिकोण का विकास होता है और ऐसा होने से मानसिक रोग का उपचार होता है। **[5]**

अथवा

तताँरा की मृत्यु समुद्र की लहरों में बह जाने तथा वामीरों की मृत्यु उसके इंतज़ार में खाना-पीना छोड़ने से हुई थी। पठित पाठ के अनुसार तताँरा धरती को काटकर उस हिस्से में रह गया जो समुद्र में धँस गया था। पानी की लहरें न जाने तताँरा को कहाँ बहाकर ले गईं। दूसरी ओर वामीरों तताँरा को खोजते-खोजते उसी जगह आ बैठती थी जहाँ से तताँरा अलग हुआ था। खाना-पीना छोड़ने और परिवार से अलग होने के कारण तताँरा की प्रतीक्षा करते हुए एक दिन वामीरों भी चल बसी।

9. (क) मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता प्राप्त होती है क्योंकि मीठी वाणी सुनने में मधुर होती है जिसे सुनकर हमारा तन और मन प्रसन्न होता है उसका प्रभाव व्यक्ति को संतोष एवं शक्ति प्रदान करता है। मीठी वाणी से सामने वाले व्यक्ति को प्रभावित करके असंभव कार्य को भी संभव किया जाता है। **[2]**

(ख) 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में कवि ने बताया है कि जब पहाड़ों पर वर्षा ऋतु में बादल बरसते हैं तब पर्वतों से प्रवाहित होने वाले झरने गिरि का गौरव गाते हुए पृथ्वी पर गिरते हैं और अपनी आवाज और गति से नस-नस में उत्तेजना का संचार कर पाते हैं। **[2]**

(ग) 'मुँह बंद होना' मुहावरे का 'तोप' कविता में कवि ने लाक्षणिक अर्थ बताते हुए कहा है कि तोप का आग उगलने वाला मुँह अब हमेशा के लिए बंद हो गया है। **[2]**

(घ) चाकरी से मीरा को कृष्ण दर्शन का लाभ मिलेगा। वह नित्य श्री कृष्ण के दर्शन कर सकेंगी और वृन्दावन की कुंज गली में गोविन्द की लीलाओं को गा सकेगी। जिससे उसको भक्तिभाव का साम्राज्य प्राप्त हो जाएगा। **[2]**

10. मीराबाई श्री कृष्ण को पाने के लिए निम्न कार्य करने को तैयार हैं-

(i) मीराबाई श्री कृष्ण के यहाँ चाकरी (नौकरी) करने के लिए तैयार हैं।

(ii) मीराबाई चाकर के रूप में बाग लगाएँगी और प्रातः काल आवाज लगाकर श्री कृष्ण का दर्शन करेंगी।

(iii) वृंदावन की गलियों में गोविंद की लीलाओं को गाकर सुनाएँगी।

(iv) मीराबाई वृंदावन में गायें भी चराने के लिए तैयार हैं। **[5]**

अथवा

सुमित्रानंदन पंत कल्पना लोक के कवि रहे हैं। उनकी कल्पनाएँ अत्यंत मनोरम हैं। उन्होंने प्रस्तुत कविता में भी प्रकृति को मानव की तरह क्रिया करते हुए दिखाया है। उन्होंने पहाड़ को अपनी शक्ल निहारता, पेड़ को अपनी उच्चाकांक्षा-सा चिंतन मुद्रा में खड़ा, झरने को गौरव-गाथा गाता हुआ, शाल के वृक्षों को भय से धँसा हुआ, बादलों को पारे के समान चमकीले पंखों को फड़फड़ाकर उड़ता हुआ और आक्रमण करता हुआ दिखाया है। पंत जी की ये सभी कल्पनाएँ गतिशील, नवीन तथा मौलिक हैं।

11. (क) हरिहर काका ने अंत में अपनी ज़मीन किसी को न देने का निर्णय लिया उनके इस निर्णय से उनके भाइयों का व्यवहार हरिहर काका के प्रति पूरी तरह से बदल गया। उन्होंने काका को महंत से भी अधिक यातनाएँ देना शुरू कर दीं और कहने लगे कि जमीन हमारे नाम कर दो नहीं तो मार कर घर में गाड़ देंगे। उनका निर्णय रिश्तों में छिपी स्वार्थ और धनलोलुपता की भावना को दर्शाता है। हमारे अपने भी स्वार्थ और लोभ-लालच में आकर अपने ही भाई-बंधु की जान के पीछे पड़ जाते हैं। उसके अपने ही परिवार के सदस्य उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगते हैं। हरिहर काका की यह स्थिति समाज के हर बुजुर्ग को यह संदेश देती है कि कभी भी अपने जीते जी अपनी संपत्ति किसी को नहीं सौंपनी चाहिए अन्यथा उनका जीवन जीते जी नरक के समान हो जाएगा और यदि फिर भी परिवार के सदस्य बुरा व्यवहार करें तो कानून की मदद लेनी चाहिए। **[3]**

(ख) पी. टी. सर की तीन चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(i) स्वाभिमानी अध्यापक- पी.टी. मास्टर का सिद्धांत है कि लड़कों को डाँट-डपटकर रखा जाए। उसकी सोच गलत हो सकती है। परंतु अपनी नज़रों में वह ठीक है। इसलिए चौथी कक्षा के बच्चों को मुर्गा बनाकर कष्ट देना उसे अनुचित नहीं लगता। अतः जब हैड मास्टर उसे कठोर दंड देने पर मुअत्तल कर देते हैं तो वह गिड़गिड़ाने नहीं जाता।

(ii) कठोर अध्यापक- पी.टी. मास्टर बहुत कठोर थे। वह छात्रों को अनुशासन में लाने के लिए बहुत कठोर और क्रूर दंड दिया करते थे। छात्रों को घुड़की देना, ठुद्डे मारना, उन पर बाघ की तरह झपटना, उनकी खाल खींचना उनके लिए बाएँ हाथ का खेल था। उन्हें यह सहन नहीं था कि कोई भी बच्चा कतार से बाहर हो या टेढ़ा खड़ा हो या अपनी पिंडली खुजलाए। वह ऐसे बच्चों को समझाने की बजाय कठोर दंड दिया करते थे।

(iii) अयोग्य व असफल अध्यापक- पी.टी. मास्टर जब फारसी पढ़ाने लगते थे तो और भी क्रूर हो उठते थे। वह बच्चों को समझाने की बजाय डंडे से काम कराना चाहते थे। वह चाहते थे कि बच्चे भय के मारे पाठ याद कर लें। जिस पाठ को कक्षा का एक भी बच्चा याद न कर पाए, वह पाठ जरूर या तो कठिन होगा या छात्र अधिक योग्य न होंगे। दोनों ही स्थितियों में मास्टर का पीटना बेतुका काम था। ऐसा व्यक्ति खच्चर तो हाँक सकता है, छात्रों को नहीं पढ़ा सकता। **[3]**

खंड 'घ' लेखन

26 अंक

12. (क) बढ़ता आतंकवादः एक चुनौती

आतंकवाद का अर्थ है-भय। जनता में भय फैलाने वालों को आतंकवादी कहा जाता है। आतंकवादी अपने स्वार्थपूर्ण राजनैतिक, सामाजिक अथवा धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लोगों में भय उत्पन्न करते हैं। वे निरीह लोगों की हत्या करके, सार्वजनिक स्थलों पर बम विस्फोट करके, सरकारी संपत्ति को हानि पहुँचाकर, अपनी तोड़-फोड़ की कार्रवाई द्वारा समाज में आतंक फैलाते हैं। इस कारण जन-जीवन हर क्षण भयाक्रांत बना रहता है। आतंकवाद वास्तव में अतिवाद का दुष्परिणाम है। बेरोजगारी, अशिक्षा, सामाजिक-आर्थिक विषमताएँ, राजनीतिक स्वार्थ, शक्तिशाली देशों द्वारा निर्बल देशों के प्रति उपेक्षा का व्यवहार, क्षेत्रवाद, धर्मांधता, भाषायी मतभेद, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक कारण, सांस्कृतिक टकराव, प्रशासनिक मशीनरी की निष्क्रियता, स्वार्थी मनोवृति आदि के कारण आतंकवाद से जूझना पड़ रहा है, वह भयावह और चिंतनीय है। इसके मूल में अलगाववादी और विघटनकारी तत्व सक्रिय हैं। इसका दुष्परिणाम यह है कि आज कश्मीर में आतंकवाद अपनी चरम सीमा पर है। वहाँ के मूल निवासी आज अपने ही राज्य में शरणार्थी बन गए हैं। **[6]**

(ख) मेरे जीवन का लक्ष्य या उद्देश्य

मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरे मन में एक ही सपना है कि मैं इंजीनियर बनूँगा। 'लक्ष्यपूर्ण जीवन के लाभ' जब से मेरे भीतर यह सपना जागा है, तब से मेरे जीवन मे अनेक परिवर्तन आ गए हैं। अब में अपनी पढ़ाई की ओर अधिक ध्यान देने लगा हूँ। पहले क्रिकेट के खिलाड़ियों और फिल्मी तारिकाओं में गहरी रुचि लेता था, अब ज्यामिति की रचनाओं और रासायनिक मिश्रणों में रुचि लेने लगा हूँ। अब पढ़ाई में रस आने लगा है। निरुद्देश्य पढ़ाई बोझ थी। लक्ष्यबद्ध पढ़ाई में आनंद है। सच ही कहा था कार्लाइल ने-**''अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाओ और इसके बाद अपना सारा शारीरिक और मानसिक बल, जो ईश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमें लगा दो।''**

मैंने निश्चय किया है कि मैं इंजीनियर बनकर इस संसार को नए-नए साधनों से संपन्न करूँगा। मेरे देश में जिस वस्तु की आवश्यकता होगी, उसके अनुसार मशीनों का निर्माण करूँगा। देश में जल-बिजली, सड़क या संचार-जिस भी साधन की आवश्यकता होगी, उसे पूरा करने में अपना जीवन लगा दूँगा।

मैं गरीब परिवार का बालक हूँ। मेरे पिता किराए के मकान में रहे हैं। धन की तंगी के कारण हम अपना मकान नहीं बना पाए। यही दशा मेरे जैसे करोड़ों बालकों की है। मैं बड़ा होकर भवन-निर्माण की ऐसी सस्ती, सुलभ योजनाओं में रुचि लूँगा जिससे मकानहीनों को मकान मिल सकें।

मैंने सुना है कि कई इंजीनियर धन के लालच में सरकारी भवनों, सड़कों, बाँधों मे घटिया सामग्री लगा देते हैं। यह सुनकर मेरा हृदय रो पड़ता है। मैं कदापि यह पाप-कर्म नहीं करूँगा, न अपने होते यह काम किसी को करने दूँगा।

मैंने अपने लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में प्रयास करने आरंभ कर दिए हैं। गणित और विज्ञान में गहरा अध्ययन कर रहा हूँ। अब मैं तब तक आराम नहीं करूँगा, जब तक कि लक्ष्य को पा न लूँ। कविता की ये पंक्तियाँ मुझे सदा चलते रहने की प्रेरणा देती हैं।- **[5]**

लक्ष्य तक पहुँचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा?

(ग) हिंदी दिवस

भारत में हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस दिन का ऐतिहासिक महत्व है। 14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया था। जो हिंदी अब तक अघोषित रूप से भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत थी, अब घोषित रूप से भारत की राजकाज की भाषा बन गई है। आज भी उस ऐतिहासिक फैसले को याद कराने के लिए इस दिन को सरकारी कार्यालयों में हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भारत विभिन्न भाषाओं वाला देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। संविधान में ही 22 भाषाओं को राष्ट्रीय भाषाओं के रूप में मान्यता दी गई है। कश्मीरी, डोगरी, पंजाबी, नेपाली, संस्कृत, सिंधी, उर्दू, उड़िया, बंगाली, मराठी, गुजराती, कोंकड़ी, मैथिली, बोडो, तमिल, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु आदि भाषाएँ भारत की राष्ट्रीय भाषाएँ ही हैं। ये किसी-न-किसी राज्य की राजभाषा भी हो सकती हैं, परंतु पूरे देश को एकता के सूत्र में बाँधने वाली भाषा एकमात्र हिंदी ही है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी भाषा का ही बोलबाला था। महात्मा गांधी, सरदार पटेल आदि क्रांतिकारियों ने हिंदी के माध्यम से ही स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। यहाँ तक कि गांधी, पटेल, सुभाष आदि नेता हिंदीभाषी नहीं थे, फिर भी उन्होंने हिंदी को संपर्क भाषा, माध्यम भाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित करने का प्रयास किया। इतना ही नहीं, भारत में व्यापार करने वाले विदेशी संस्थान हों या स्वयं अंग्रेज शासक, सभी ने हिंदी भाषा के महत्व को समझा। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हिंदी ऊपर से थोपी नहीं गई है बल्कि यह यहाँ की वास्तविक सच्चाई है। आज़ादी से पहले इंग्लैंड से आने वाले शासक हिंदी भाषा सीखकर पूरे देश पर शासन किया करते थे।

आज सब जगह अंग्रेजी का बोलबाला नजर आता है। शिक्षा और कामकाज में अंग्रेजी की तूती बोल रही है। परंतु यह भी सच है कि दैनिक व्यवहार और मनोरंजन में हिंदी का ही प्रमुख स्थान है। समाचार-पत्र, दूरदर्शन के चैनल, लोकप्रिय धारावाहिक, फिल्में, विज्ञापन आदि सभी में हिंदी का ही बोलबाला है।

हिंदी भाषा न केवल देश की बड़ी भाषा है बल्कि यह दिल से भी बहुत उदार है। इसमें पंजाबी, मराठी, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं के साथ चलने की अद्‌भुत क्षमता है। आजादी के बाद इसने अंग्रेजी के साथ भी तालमेल दिखाया है। आज हिंदी भाषा में अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के हजारों शब्द इस तरह समा गए हैं कि वे हिंदी के ही प्रतीत होते हैं। अपनी इसी लोचदार प्रवृति के कारण इसका विकास अनवरत होता जा रहा है। **[5]**

13. सेवा में,

अध्यक्ष, जल निगम

आगरा।

विषय-नलों में गंदे पानी की आपूर्ति के संबंध में

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं विकासपुरी क्षेत्र का निवासी आपका ध्यान नलों में गंदा पानी आने की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

आप जानते हैं कि जल ही जीवन है। पीने का स्वच्छ पानी तो हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, किंतु दु:ख की बात यह है कि कुछ महीनों से नलों में गंदा पानी आ रहा है। उस पानी में न जाने कितने कीटाणु मौजूद होंगे जो कि बीमारियों की जड़ हैं। हमारे ही मोहल्ले में कई घरों में लोग बीमार पड़े हुए हैं जिसका कारण निश्चित रूप से नलों में आने वाला गंदा पानी ही है।

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप जल्द से जल्द इस समस्या की ओर ध्यान दें व स्वच्छ जल प्रदान करने का प्रयास शीघ्रातिशीघ्र करें।

धन्यवाद

भवदीय

क,ख,ग **[5]**

अथवा

सेवा में,

प्रधानाचार्य जी,

केंद्रीय विद्यालय नं. 01

अजीत नगर, आगरा।

विषय-मध्यावकाश के समय ठेले और रेहड़ी वालों द्वारा जंक फूड बेचे जाने की शिकायत हेतु।

महोदय,

मेरा नाम राजीव शर्मा है। मैं कक्षा 10वीं 'अ' में पढ़ता हूँ। मैं आपका ध्यान मध्यावकाश के समय ठेले और रेहड़ी वालों द्वारा जंक फूड बेचे जाने की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। बच्चे इसे खाकर बीमार पड़ रहे हैं। हमारे स्कूल में कैंटीन न होने के कारण बच्चे इसे खाने को विवश हैं। अत: आपसे प्रार्थना है कि आप यथाशीघ्र इस विषय पर ठोस कदम उठाएँ। आपके इस कार्य के लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

राजीव शर्मा **[5]**

14.

सूचना **दिनांक- 10 सितंबर 20.....**

विद्यालय के समस्त छात्र/छात्राओं को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में 'प्राचीर' पत्रिका छापी जानी है। पत्रिका के लिए जो भी विद्यार्थी लेख, कविता, निबंध आदि प्रस्तुत करना चाहता है वह 10 दिन के अंदर दिनांक 20 सितंबर तक कार्यालय में या अपने कक्षाध्यापक के पास अवश्य प्रस्तुत कर दें।

आज्ञा से

सचिव,

'साहित्यिक क्लब'

होली पब्लिक स्कूल आगरा।

[5]

अथवा

जल संरक्षण संबंधी सूचना **दिनांक- 15 जुलाई 20....**

नवयुग अपार्टमेंट के सभी निवासियों को सूचित किया जाता है कि जल-आपूर्ति कम होने के कारण भी हमें पानी की कमी की समस्या से लड़ना पड़ता है। कृपया अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी समझते हुए जल-संरक्षण में योगदान दें। आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

प्रमोद सिंह,

सचिव।

15. माँ-बेटे के बीच संवाद

सचिन - माँ, हमारी गर्मियों की छुट्टियाँ होने वाली हैं, हम घूमने कहाँ जाएँगे?

माँ - बेटा, इस बार हम गर्मियों की छुट्टियों में कहीं नहीं जाएँगे, क्योंकि जहाँ भी जाओ वहीं वाहनों का शोर-शराबा और प्रदूषण; ऊपर से खर्चा अलग होता है।

सचिन - नहीं माँ, कहीं तो चलना पड़ेगा। हम पूरी साल इन छुट्टियों का इंतजार करते हैं।

माँ – बेटा, छुट्टियाँ मनाने और मनोरंजन करने के और भी तरीके हैं, हम घर पर रहकर खूब मस्ती करेंगे, एक साथ वक्त बिताएँगे।

सचिन – लेकिन माँ, मेरे तो सभी मित्र घूमने जा रहे हैं।

माँ – बेटा कोई बात नहीं है, तुम इस बार घर पर रहकर तो देखो। अब तुम बड़ी कक्षा में आ गए हो, अब तुम्हें पढ़ाई और अपने स्वास्थ्य को भी अधिक समय देने की ज़रूरत है।

सचिन – ठीक है माँ, आप कहती हैं तो इस बार घूमने नहीं जाएँगे, घर पर रहकर ही समय का सदुपयोग करेंगे। **[5]**

अथवा

सहपाठी से संवाद

सरिता – अनीता! कैसी हो?

अनीता – मैं तो अच्छी हूँ! तुम बताओ, कल विद्यालय क्यों नहीं आई?

सरिता – अनीता, कल अचानक मेरी तबियत खराब हो गई थी। अनीता क्या तुम मुझे कक्षा में होने वाले कार्यों के विषय में बताओगी?

अनीता – हाँ, हाँ, क्यों नहीं।
विज्ञान विषय के अंतर्गत - पाठ-5 के प्रश्नोत्तर कराए हैं,
हिंदी में क्रियाविशेषण के भेद पढ़ाए गए हैं।

सरिता – अनीता! मुझे ये कार्य अभ्यास-पुस्तिका में करना है, क्या तुम मेरी मदद करोगी?

अनीता – हाँ जरूर! चलो आज मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर चलती हूँ वहीं पर सारा कार्य कर लेंगे।

16.

पुराने मकान की बिक्री के लिए विज्ञापन

मकान बिकाऊ है

100 वर्गगज में वास्तुशास्त्र द्वारा निर्मित पुराना रिहायशी बना हुआ मकान-पश्चिमपुरी बोदला के आगे आगरा, में सभी सुख-सुविधायुक्त, बिकाऊ है। मात्र ₹15 लाख में।

इच्छुक खरीदार ही संपर्क करें

फोन नंबर- 4123470××

अथवा

बिकाऊ है

सिकन्दरा साइट - बी मथुरा रोड आगरा में करीब 1000 वर्ग गज का प्लॉट, दो साइड रोड तुरन्त प्राप्त करें। वास्तविक ग्राहक ही सम्पर्क करें

सुबह - 9 बजे से सांय 7 बजे तक

मो. 94587322xx और 9401235xx

● ●

हिंदी 'ब'

अति-संभावित प्रश्न-पत्र 2

अभ्यास प्रश्न-पत्र

सी.बी.एस.ई, कक्षा X परीक्षा

समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

1. *इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं-क, ख, ग और घ।*
2. *चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।*
3. *यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।*
4. *एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।*
5. *दो अंको के प्रष्ठनों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।*
6. *तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।*
7. *पाँच अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।*

खंड 'क' अपठित बोध — 10 अंक

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- **[10]**

चरित्र का मूल भी भावों के विशेष प्रकार के संगठन में ही समझना चाहिए। लोकरक्षा और लोक-रंजन की सारी व्यवस्था का ढाँचा इन्हीं पर ठहराया गया है। धर्म-शासन, राज-शासन, मत-शासन सबमें इनसे पूरा काम लिया गया है। इनका सदुपयोग भी हुआ है और दुरुपयोग भी। जिस प्रकार लोक कल्याण के व्यापक उद्देश्य की सिद्धि के लिए मनुष्य के मनोविकार काम में लाए गए हैं उसी प्रकार संप्रदाय या संस्था के संकुचित ओर परिमित विधान की सफलता के लिए भी। सब प्रकार के शासन में चाहे धर्म-शासन हो, चाहे राज-शासन, मनुष्य-जाति के भय और लोभ से पूरा काम लिया गया है। दंड का भय और अनुग्रह का लोभ दिखाते हुए राज-शासन तथा नरक का भय और स्वर्ग का लोभ दिखाते हुए धर्म-शासन और मत-शासन चलते आ रहे हैं। इसके द्वारा भय और लोभ का प्रवर्तन सीमा के बाहर भी प्रायः हुआ है और होता रहता है। जिस प्रकार शासक-वर्ग अपनी रक्षा और स्वार्थसिद्धि के लिए भी इनसे काम लेते आए हैं उसी प्रकार धर्म-प्रवर्तक और आचार्य अपने स्वरूप वैचित्र्य की रक्षा और अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा के लिए भी। शासक वर्ग अपने अन्याय और अत्याचार के विरोध की शांति के लिए भी डराते और ललचाते आए हैं। मत-प्रवर्तक अपने द्वेष और संकुचित विचारों के प्रचार के लिए भी काँपते और डराते आए हैं। एक जाति को मूर्ति-पूजा करते देख दूसरी जाति के मत-प्रवर्तकों ने उसे पापों में गिना है। एक संप्रदाय को भस्म और रुद्राक्ष धारण करते देख दूसरे संप्रदाय के प्रचारकों ने उनके दर्शन तक को पाप माना है।

(क) लोकरंजन की व्यवस्था का ढाँचा किस पर आधारित है? तथा इसका उपयोग कहाँ किया गया है? **[2]**

(ख) दंड का भय और अनुग्रह का लोभ किसने और क्यों दिखाया है? **[2]**

(ग) धर्म-प्रवर्तकों ने स्वर्ग-नरक का भय और लोभ क्यों दिखाया है? **[2]**

(घ) संप्रदायों-जातियों की भिन्नता किन रूपों में दिखाई देती है? **[2]**

(ङ) शासन व्यवस्था किन कारणों से भय और लालच का सहारा लेती है? **[1]**

(च) मत प्रवर्तक लोगों को क्यों डराते है? **[1]**

उत्तरमाला संलग्न

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण — 16 अंक

2. शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने पर क्या कहलाता है? उदाहरण देकर समझाइए। **[1]**

अथवा

शब्द किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर शब्द और पद में अंतर स्पष्ट कीजिए।

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- **[1 × 3 = 3]**

(क) आसमान में बादल घिरने पर किसान प्रसन्न होते हैं। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ख) जो सजग रहता है उसे हानि नहीं उठानी पड़ती। (सरल वाक्य में बदलिए)

(ग) कुछ लोग भाषण देते रहते हैं और मन में संतुष्ट रहते हैं। (रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

(क) निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए- **[1×2 = 2]**

(*i*) मृदुवचन (*ii*) देहदान

(ख) निम्नलिखित शब्दों को समस्त-पद बनाकर समास का नाम लिखिए- **[1 × 2 = 2]**

(*i*) प्रकृति का वर्णन (*ii*) गोरा है जो वर्ण

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए- **[1 × 4 = 4]**

(क) यहाँ पर कल एक लड़का और लड़की बैठी थी।

(ख) मुझे केवल मात्र अपना अधिकार चाहिए।

(ग) इस विद्यालय का परीक्षा परिणाम अच्छी है।

(घ) मास्टर जी ने उसकी बड़ी प्रशंसा करी।

6. निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए- **[1 × 4 = 4]**

साँस थमना, दाँतों पसीना आना, टका सा जवाब देना, ढेर हो जाना

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक — 28 अंक

7. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 30-40 शब्दों में लिखिए- **[2 + 2 + 2 = 6]**

(क) निकोबार के लोग तताँरा को क्यों पसंद करते थे? **[2]**

(ख) 26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई? **[2]**

(ग) 'बड़े भाई साहब' कहानी में भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे? **[2]**

(घ) गांधी जी व्यावहारिकता का आदर्शों के साथ कैसे मिलान करते थे? **[2]**

8. 'शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना' गांधी जी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है? 80-100 शब्दों में लिखिए। **[5]**

अथवा

बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में 80-100 शब्दों में लिखिए।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 30-40 शब्दों में लिखिए- **[2 + 2 + 2 = 6]**

(क) 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है और क्यों? **[2]**

(ख) ग्रीष्म ऋतु में संसार तपोवन-सा कैसे हो जाता है? बिहारी के 'दोहे' के आधार पर उत्तर दीजिए। **[2]**

(ग) 'आत्मत्राण' कविता की प्रार्थना अन्य प्रार्थना गीतों से भिन्न है? सिद्ध कीजिए। **[2]**

(घ) कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी हैं? **[2]**

10. 'तोप' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए। **[5]**

अथवा

'कर चले हम फ़िदा' कविता के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि बलिदानी वीर भारतीय युवकों से क्या अपेक्षा करते हैं और क्यों?

11. (क) मानवीय मूल्यों के आधार पर इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला की दोस्ती की समीक्षा कीजिए। **[3]**

(ख) हरिहर काका के जीवन के अनुभवों से हमें क्या सीख मिलती है? पाठ के आधार पर लिखिए। **[3]**

खंड 'घ' लेखन — 26 अंक

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए- **[6]**

(क) ग्लोबल वार्मिंग

- प्राकृतिक असंतुलन
- वार्मिंग के कारण
- उपाय

(ख) बाल-श्रमिक

- बाल श्रमिक की दिनचर्या
- व्यवसायियों द्वारा शोषण
- प्रशासन व समाज-सेवियों का सहयोग

(ग) महिला सुरक्षा

- नारी का दु:खद जीवन
- असुरक्षा के कारण
- समाज की धारणा

13. सर्वशिक्षा अभियान के प्रोत्साहन हेतु विद्यालय में रात्रिकालीन शिक्षण की व्यवस्था करवाने की अनुमति माँगते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

बढ़ती हुई मँहगाई पर चिंता प्रकट करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के प्रधान संपादक को पत्र लिखिए।

14. विद्यालय के प्रधानाचार्य की ओर से वार्षिकोत्सव समारोह के आयोजन से संबंधित बैठक के लिए 20-30 शब्दों में एक सूचना तैयार कीजिए। **[5]**

अथवा

अपना परिचय-पत्र खो जाने की जानकारी देते हुए 20-30 शब्दों में एक सूचना लिखिए।

15. आपको टी.वी. देखना बहुत पसंद है परंतु आपकी माताजी को यह समय की बर्बादी लगती है। आपके और आपकी माताजी के बीच जो संवाद होंगे, उन्हें लगभग 50 शब्दों में लिखिए। **[5]**

अथवा

एक दुर्घटना के बाद दो बच्चों में सड़क सुरक्षा की समस्या पर परस्पर संवाद को लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

16. अपने पिताजी की पुरानी कार की बिक्री हेतु विवरण देते हुए लगभग 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए। **[5]**

अथवा

एक नृत्य प्रशिक्षण केन्द्र के लिए 20-25 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए।

● ●

हिंदी 'बी'
प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र
उत्तरमाला

सी.बी.एस.ई, कक्षा X

2

खंड 'क' अपठित बोध 10 अंक

1. (क) लोकरंजन की व्यवस्था का ढाँचा भावों के विशेष संगठन पर आधारित है। लोकरंजन व्यवस्था का उपयोग धर्म, राज और मत-शासन में किया गया है। **[2]**

(ख) दंड का भय और अनुग्रह का लोभ राजशासन ने दिखाया क्योंकि लोगों द्वारा अन्याय और अत्याचार का विरोध न हो सकें **[2]**

(ग) धर्म प्रवर्तकों ने स्वर्ग नरक का भय अपने स्वरूप वैचित्र्य की रक्षा के लिए तथा अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए दिखाया। **[2]**

(घ) संप्रदायों, जातियों की भिन्नता बाह्य आडंबर जैसे- मूर्ति पूजा करना, रुद्राक्ष धारण करना तथा भस्म लगाना आदि जैसे रूपों में दिखाई देती है; कोई इनका विरोध करता है तो कोई इनका समर्थन। **[2]**

(ङ) शासन व्यवस्था अपनी रक्षा और स्वार्थ सिद्धि के लिए भय और लालच का सहारा लेती है। **[1]**

(च) मत-प्रवर्तक अपने द्वेष और संकुचित विचारों के प्रचार के लिए लोगों को डराते हैं। **[1]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16

2. 'शब्द' वाक्य में प्रयुक्त होने पर पद् कहलाता है क्योंकि वह व्याकरण के नियमों में बंधकर वाक्य में प्रयुक्त शब्दों से संबंधित हो जाता है। **[1]**

उदाहरण- राम ने खाना खाया।

अथवा

वर्णों के मेल से बने स्वतंत्र सार्थक वर्ण समूह को शब्द कहते हैं

उदाहरण - शब्द - लड़का

उदाहरण - पद - लड़का पुस्तक पढ़ रहा है।

3. (क) जब आसमान में बादल घिरते हैं तब किसान प्रसन्न होते हैं। **[1]**

(ख) सजग रहने वालों को हानि नहीं उठानी पड़ती। **[1]**

(ग) संयुक्त वाक्य। **[1]**

4. (क) *(i)* मधुर है जो वचन-कर्मधारय समास

(ii) देह का दान-तत्पुरुष समास

(ख) (*i*) प्रकृतिवर्णन–तत्पुरुष समास

(*ii*) गौरवर्ण–कर्मधारय समास **[4]**

5. (क) यहाँ पर कल एक लड़का और लड़की बैठे थे।

(ख) मुझे केवल/मात्र अपना अधिकार चाहिए/ मुझे अपना अधिकार मात्र चाहिए।

(ग) इस विद्यालय का परीक्षा परिणाम अच्छा है।

(घ) मास्टर जी ने उसकी बड़ी/बहुत प्रशंसा की। **[4]**

6. साँस थमना– (स्तब्ध रहना/ साँस रुकना) सड़क पर हुए उस हादसे को देखकर तो मेरी साँस ही थम गई। **[1]**

दाँतों पसीना आना– (क्रोध करना) मैं जब भी मोहिनी को देखती हूँ, दाँतों पसीना आ जाता है। **[1]**

टका–सा जवाब देना– (साफ इंकार करना) मैं रोहन से सहायता माँगने गया था पर उसने मुझे टका–सा जवाब दे दिया। **[1]**

ढेर हो जाना– (मर जाना) भरतीय सैनिकों ने चार आतंकियों को ढेर कर दिया। **[1]**

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक **28 अंक**

7. (क) निकोबार के लोग तताँरा को इसलिए पसंद करते थे, क्योंकि तताँरा सुंदर, शक्तिशाली, नेक, मददगार व्यक्ति था। सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता था। वह अपने गाँव वालों की ही नहीं अपितु संपूर्ण द्वीप वासियों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। अपने इसी परोपकारी और त्यागी स्वाभाव के कारण वह चर्चित था और आदर का पात्र था और लोग उसे (तताँरा को) पसंद करते थे। **[2]**

(ख) 26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए काफी तैयारियाँ की गई। कार्य का भार अलग–अलग लोगों को सौंपा गया, कार्यकर्त्ता घर–घर जाकर प्रचार कर रहे थे और कार्यकर्ताओं को भी समझाया जा रहा था। मकानों व पार्को की सजावट की गई थी तथा कलकत्ता के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए थे। **[2]**

(ग) 'बड़े भाई साहब' कहानी में भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए अपनी कॉपियों के किनारों पर जानवरों के चित्र बनाते थे तथा कोई वाक्य या दस–बीस शेर कॉपी में लिखते थे। **[2]**

(घ) गांधी जी आदर्शवादी थे, उन्होंने अपने व्यवहार को आदर्श के समान ऊँचा बनाया था। दूसरे शब्दों में वे ताँबे में सोना मिलाते थे। वे अपने आदर्शों को व्यावहारिक बनाने के नाम पर उन्हें नीचे नहीं गिरने देते थे। **[2]**

8. 'शुद्ध सोने में ..... में सोना' गांधी जी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात झलकती है। लोग गांधी जी को व्यावहारिक और आदर्शवादी मानते थे। इसीलिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके, उनके व्यवहार और आदर्शों से प्रभावित होकर देशवासी उनके पीछे–पीछे चल पड़े। उनके आग्रह पर स्वदेशी स्वाधीनतावाद को स्वीकार कार्य कर सके। गांधी जी ने आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं दिया बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शो के स्तर पर चढ़ाया था। वे सोने में ताँबा नहीं ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। गांधी जी ने आज़ादी की लड़ाई में साधारण व्यक्तियों को जोड़कर उनकी कीमत व प्रसिद्धि बढ़ाई, चाहे वे कृषक पुत्र राजेंद्र प्रसाद हों या सरदार पटेल या जवाहरलाल नेहरू हों, गांधी जी के व्यक्तित्व, सिद्धांतों से प्रभावित होकर ही लोग उनके निकट आए। **[5]**

अथवा

बहुत से लोग घायल हुए, लॉकअप में रखे गए, स्त्रियाँ जेल गईं फिर भी इस दिन को अपूर्व इसलिए कहा गया है क्योंकि इस दिन बहुत अधिक लोगों ने स्वतंत्रता दिवस मनाया था। लोगों ने अपने–अपने नेताओं के संरक्षण में झंडारोहण करके विशाल सभाएँ कीं और जुलूस निकाले थे तथा ब्रिटिश सरकार के बनाए कानून को तोड़ने के अपराध से युवाओं, पुरुषों व स्त्रियों को पुलिस का कोप भाजन बनना पड़ा था तथा महिलाओं को जेल भी जाना पड़ा था। इसलिए यह दिन अपूर्व है। इस दिन लगभग 200 कार्यकर्ता घायल हुए थे और बंदी बनाए गए थे। आज जो कुछ भी हुआ वह अपूर्व हुआ। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ कोई काम नहीं हो रहा है, आज वह कलंक काफी हद तक धुल गया था।

9. (क) 'कर चले हम फिदा' कविता में साथियों संबोधन देशवासियों के लिए किया गया है क्योंकि एक-एक सैनिक साथी अपने अन्य साथियों से कह रहा है कि हे देशवासियों, हमारे बाद अब इस देश की रक्षा का दायित्व तुम्हारा है। **[2]**

(ख) ग्रीष्म ऋतु में तपकर वन तपोवन बन जाता है। तपोवन पर ऋषियों और मुनियों की तपस्या का प्रभाव होने के कारण वहाँ का वातावरण भी प्रेम और सौहार्द से भर जाता है। परस्पर शत्रुता रखने वाले प्राणी अर्थात शेर, हिरण, मोर व साँप जैसे जीव भी वहाँ प्रेम व भाईचारे के साथ एक साथ बैठे हुए दिखाई देते हैं। जो कि इस संसार (जगत) के मानव को प्रेम, भाईचारे व एकता की भावना विकसित करने की ओर प्रेरित करते हैं। **[2]**

(ग) रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित 'आत्मत्राण' नामक प्रार्थना अन्य प्रार्थनाओं से भिन्न है क्योंकि अधिकांश प्रार्थनाओं में कष्ट को हरने, इच्छापूर्ति करने की याचना तथा ईश्वर आश्रय का अनुग्रह होता है, पर प्रस्तुत प्रार्थना में परमात्मा से आत्मविश्वास, मनोबल दृढ़ करने की कामना, कर्मठता तथा स्वाबलंबन की याचना की गई है। **[2]**

(घ) कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है क्योंकि सभी-प्राणी मूलत: एक हैं वे एक ही पिता की संतान हैं पूरी मानवता एक है। दूसरे मनुष्य का धर्म है कि वह दूसरों को भी उठान, बढान और तरने के काम आए। **[2]**

10. वीरेन डंगवाल द्वारा रचित कविता 'तोप' शस्त्र-शक्ति और बलपूर्वक दमन का विरोध करती है। इस कविता में कवि ने बताया है कि तोपों, तलवारों से जनता की आवाज़ को कुछ समय के लिए दबाया जा सकता है, हमेशा के लिए नहीं। जनता का विद्रोह समय आने पर बड़ी-बड़ी तोपों का मुँह बंद कर देता है, बड़े-बड़े अत्याचारियों को उखाड़ फेंकता है, तब ये तोप बच्चों के खिलौने बन जाती हैं और इनकी व्यर्थता का उपहास उड़ाया जाता है। **[5]**

अथवा

'कर चले हम फिदा' कविता के आधार पर बलिदानी वीर अपने अन्य साथियों से कहते हैं कि हम तो आपने देश पर कुर्बान हो गए, अब इस देश की रक्षा का दायित्व तुम्हारा है। हमने आखिरी साँस तक हिमालय का सिर झुकने नहीं दिया। देश के लिए बलिदान होने का अवसर रोज-रोज नहीं आता, यह सौभाग्य की बात है कि आज देश की धरती की रक्षा के लिए शत्रुओं का लहू बहाना है। कुर्बानियों की जो राह हमने बनाई है वह आगे भी बनी रहे इसके लिए तुम स्वयं को तैयार रखना। आज आर-पार की लड़ाई का समय है तुम बलिदान देने को तैयार रहना।

11. (क) राही मासूम रज़ा की कहानी 'टोपी शुक्ला' में इफ़्फन व टोपी जिगरी दोस्त हैं। दोनों आजाद प्रवृत्ति के हैं। अलग-अलग धर्म के होने पर भी दोनों में आत्मीयता है, दोनों मित्र एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करते हैं। सुख-दु:ख में सहभागी होते हैं तथा वे एक दूसरे के मनोभावों को समझते भी हैं। इस प्रकार से दोनों धार्मिक सद्भावना के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। उन दोनों ही मित्रों का विचार है कि-प्रेम न जाने जात-पाँत, प्रेम न जाने खिचड़ी भात। दोनों ही मित्र अपनी दोस्ती के आड़े जात-पाँत, धर्म, रहन-सहन, हैसियत व रीति-रिवाज को नहीं आने देते। **[3]**

(ख) हरिहर काका के जीवन के अनुभवों से हमें यह सीख मिलती है कि कभी भी अपने जीते जी अपनी सम्पत्ति किसी को नहीं सौंपनी चाहिए अन्यथा उनका जीवन नर्क के समान हो जाएगा और यदि फिर भी परिवार के सदस्य बुरा व्यवहार करें तो कानून की मदद लेनी चाहिए। क्योंकि जब अंत में हरिहर काका ने अपने जीते जी अपनी जमीन किसी को भी न देने का निर्णय लिया तो यह सुनकर उनके भाइयों ने हरिहर काका को महंत से भी अधिक यातनाएँ दीं-यहाँ तक कि वे काका से कहने लगे कि जमीन हमारे नाम कर दो नहीं तो मार कर घर में गाड़ देंगे। उनका निर्णय रिश्तों में छिपी स्वार्थ और धन-लोलुपता को दर्शाता है अत: हमे यह समझना चाहिए कि हमारे अपने भी स्वार्थ और लोभ-लालच में आकर अपने ही भाई-बंधु के पीछे पड़ जाते हैं और उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगते हैं। **[3]**

खंड 'घ' लेखन

26 अंक

12. (क) ग्लोबल वार्मिंग

धरती जीवनदायिनी है। चंद्र-मंगल आदि ग्रहों पर जीवन नहीं है। इसका कारण है- पर्यावरण या वातावरण। धरती पर जलवायु ऐसी है कि इस पर वनस्पति पैदा हो सकी, जल के स्रोत बन सके और जीव पैदा हो

सका। यह जीवन-लीला तभी चल सकती है जबकि यहाँ का प्राकृतिक वातावरण निर्दोष बना रह सके।

दुर्भाग्य से आज पर्यावरण का यह संतुलन टूट गया है। जीवन जीने के लिए जितना ताप चाहिए, जितना जल चाहिए, जितने वृक्ष-जंगल चाहिए। जितनी बर्फ, जितने ग्लेशियर और नदियाँ चाहिए, उन सबमें खलल पड़ गया है। धरती पर जितने हिमखंड चाहिए और जितना समुद्री जल चाहिए, उसका संतुलन बिगड़ गया है। चौंकांने वाली बात यह है कि आज हर रोज़ एकड़ों जमीन समुद्र में समाती जा रही है। उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव के बर्फीले पहाड़ पिघल-पिघल कर समुद्र में मिलते जा रहे हैं। इसके कारण समुद्र का जल बढ़ता जा रहा है। भय है कि आने वाले 30-40 सालों में चेन्नई, मुंबई आदि के समुद्र-तट अपने किनारे बसे नगरों को लील जाएँगे। जैसे भगवान कृष्ण की द्वारिका नगरी समुद्र में समा गई थी, वैसे ही एक दिन सारी धरती जलमग्न हो जाएगी। यह संसार जल-प्रलय में डूब जाएगा। जो जल जीवन देता है वही एक दिन जीवन को नष्ट कर देगा।

जल की इस विनाशलीला का कारण है- पर्यावरण में बढ़ता हुआ ताप। जितनी मात्रा में हम फ्रिज, ए.सी., परमाणु भट्टियाँ या कार्बन छोड़ने वाले रसायनों का उपयोग कर रहे हैं; वातावरण में डीज़ल-तेल या खतरनाक रसायनों को जला रहे हैं साथ ही नमी पैदा करने वाले जंगलों और वनस्पतियों को काट रहे हैं, उससे गर्मी भीषण रूप से बढ़ रही है। पूरे वायुमंडल में गर्मी का एक गुब्बार-सा छा गया है। परिणामस्वरूप हमारे पर्यावरण पर कवच की तरह जमी ओजोन गैस की परत में छेद हो गया है। इससे सूर्य की विषैली किरणें तरह-तरह के रोग पैदा कर रही हैं। आज मनुष्य के लिए खुली हवा और धूप में निकलना भी दूभर हो गया है।

इस ताप को बढ़ाने में आज का मनुष्य दोषी है। वह सुख-सुविधा के मोह में अपनी मौत का सामान इकट्ठा कर रहा है। इसलिए कवि ने लिखा है-

ओ मनुज! गर ताप को तू यों बढ़ाता जाएगा।
मत समझ यह जग जलेगा, तू भी न बच पाएगा।
आज जिस धरती को तूने है बनाया आग-सा।
तू झुलस कर खुद इसी में एक दिन मर जाएगा। *अशोक बत्रा*

धरती को ताप से बचाने का एक ही उपाय है- अपने पापों का प्रायश्चित करना। जिन-जिन कारणों से हमने ताप बढ़ाया है, कष्ट उठाकर भी उन कारणों को बढ़ने से रोकना जैसे - पौधे लगाना, हरियाली उगाना। मशीनी जीवन की बजाय प्रकृति की गोद में लौटना। **[6]**

(ख) बाल श्रमिक

बाल श्रमिक का प्रचलित नाम है- बाल मज़दूर। मज़दूर का नाम सुनते ही हमारे सामने किसी कठोर काम में लगे रूखे-सूखे फटेहाल आदमी का चेहरा आ जाता है। दूसरी ओर किसी बालक का नाम सुनते ही किसी कोमल मासूम बच्चे का रूप सामने आ जाता है। यही परस्पर विरोधी रूप हमारे मन में करुणा पैदा करता है। एक कोमल बच्चे को घोर मेहनत करते देखकर हमारा हृदय पसीज उठता है। किसी बच्चे का होटल पर दिन-रात बर्तन माँजना, अँगीठी सुलगाना, ग्राहकों की सेवा करना, छोटी बच्चियों का घरों में सफाई करना या फिर अपने माता-पिता के साथ ईंटें ढोना बड़े मार्मिक दृश्य हैं। यह मानों बच्चों का बचपन छीनना है जो कि मानवता के प्रति अपराध है।

कभी एक बाल-मज़दूर की दिनचर्या देखिए। उसे माता-पिता या मालिक की झिड़कियाँ बिस्तर से उठाती हैं। उठते ही उस पर काम पर जाने का तनाव हावी हो जाता है। होना यह चाहिए कि उसके माता-पिता उसे बड़े लाड़-प्यार से उठाएँ, उसे स्कूल के लिए तैयार करें, उसे गर्म-गर्म नाश्ता मिले। वह प्यार-दुलार पाकर जीवन में आगे बढ़ने के लिए उत्साहित हो। परंतु उस पर सवार हो जाती हैं घर चलाने की जिम्मेदारियाँ। काम पर पहुँचने पर भी उसका वहाँ पर स्वागत नहीं होता। मालिक लोग उससे बड़ी बेरहमी से पेश आते हैं। उसे बात-बात पर अपमानित किया जाता है। जो काम बड़े प्यार से लिया जा सकता है, उसे डाँट-डपट से लिया

जाता है। मालिक बाल-मज़दूरों पर मनमाने अत्याचार करते हैं। उनसे देर रात तक काम लिया जाता है। उन्हें दोपहर में आराम की सुविधा नहीं दी जाती। यदि बाल मज़दूर काम करने में न-नुकर करे तो उसे बुरी तरह पीटा जाता है। बेचारा मासूम बालक मन मसोस कर रह जाता है।

लज्जा की बात यह है कि बड़े-बड़े व्यवसायी से लेकर छोटे दुकानदार और उद्योगपति सभी उसका जबरदस्त शोषण करते हैं। उनके अपने बच्चे आराम की ज़िंदगी जीते हैं, परंतु ये बाल-मज़दूर पीड़ा के आँसू रोते हैं। बाल-मज़दूर आसानी से दबाव में आ जाते है। ये अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं होते, इसलिए इन्हें बहुत कम वेतन पर रखा जाता है और इनसे बहुत अधिक काम लिया जाता है।

दुर्भाग्य यह है कि इन बाल-श्रमिकों के हितों की देखभाल करने वाला कोई नहीं है। सरकार ने बाल-मज़दूरी को अपराध घोषित कर दिया है। परंतु उनकी नाक के नीचे बच्चे काम करते नजर आते हैं। यहाँ तक कि सरकारी अफसरों को चाय पिलाने वाला भी बाल-मज़दूर होता है। समाजसेवी संस्थाएँ भी बाल-मज़दूरों की दुर्दशा पर खूब आँसू बहाती हैं। वे कभी-कभी उनकी सहानुभूति में नकली आँसू भी बहा लेती हैं, परंतु इस समस्या का समाधान उनके वश में नहीं है। वास्तव में भारत में गरीबी इतनी अधिक है कि बाल-मज़दूरों के माता-पिता उनसे मज़दूरी कराने के लिए विवश हैं। हालाँकि सरकार ने आरंभिक शिक्षा को पूरी तरह मुक्त कर दिया है, परंतु बाल-मज़दूरों के माँ-बाप तो उनसे मज़दूरी कराकर धन कमाना चाहते हैं। उनकी इस मानसिकता को बदलना होगा। इसके लिए लंबे समय तक समझाने-बुझाने और प्रेरित करने का सिलसिला शुरू करना होगा। तभी बच्चों को उनका बचपन लौटाया जा सकेगा। **[6]**

(ग) महिला सुरक्षा

मैथिलीशरण गुप्त ने नारी की असहाय अवस्था पर आँसू बहाते हुए कहा था-

अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध, और आँखों में पानी।।

सौ वर्ष पहले कही गई वह उक्ति आज भी ज्यो-ज्यों-की-त्यों सच है। कहने को भारत की नारी ने बहुत प्रगति की है। दिखने में वह पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। किंतु सच्चाई एकदम विपरीत है। साँझ का झुटपुटा होते ही उसे अपने 'अबला' होने का अहसास होने लगता है। सड़क पर चलने वाला हर शख़्स उसे दबोच लेना चाहता है। सूनी सड़कें ही नहीं, आन-बान-शान से जगमगाते नगर भी उसकी अस्मत लूट लेना चाहते हैं। पहले भारत की राजधानी दिल्ली बदनाम हुई, अब सुरक्षित मानी जाने वाली मुंबई की भी पोल खुल रही है। ऐसा लगता है कि भारतीय नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। न घर में, न बाहर, न कार्यालय में, न परिवार में।

प्रश्न उठता है कि नारी-सुरक्षा के सभी उपाय होते हुए भी वह असुरक्षित क्यों है? क्या भारत में नारी को सुरक्षा और सम्मान देने वाले कानूनों की कमी है? नहीं। क्या हमारी पुलिस कमज़ोर है? नहीं। कानून और पुलिस चाहे तो नारी के साथ होने वाला दुराचार समाप्त हो सकता है। हमारी न्यायपालिका भी असमर्थ नहीं है। फिर भी नारी पीड़ित है तो इसके गहरे सामाजिक कारण हैं।

सर्वेक्षण बताते हैं कि नारी का शोषण घर-परिवार और मुहल्ले में अधिक होता है, बाहर सूनी जगह में कम। जब नारी के संबंधी, रिश्तेदार, मित्र और परिचित ही उस पर बुरी नज़र रखते हैं तो बात चिंतनीय हो जाती है। यहाँ न पुलिस कुछ कर सकती है, न कानून। यहाँ समाज के संस्कार ही काम आ सकते हैं। आवश्यकता है कि हम अपने बच्चों को आरंभ से ही नारी-सम्मान, यौन-पवित्रता के संस्कार दें। जो भी इन सीमाओं का अतिक्रमण करे उनका घर-परिवार में बहिष्कार करें।

नारी-असुरक्षा का दूसरा पहलू कानून और पुलिस की लापरवाही से जुड़ा है। दुर्भाग्य से पुलिस और कानून में पुरुषों का बोलबाला है। वहाँ पुरुषों की मनमानी चलती है। अत: जब भी कोई पुरुष किसी नारी के साथ

यौनाचार करता है तो उसका समाज उसे निर्मम होकर दंड नहीं देता, बल्कि बीच-बचाव करने की कोशिश करता है। इतनी शह पाकर दुष्ट और ढीठ बलात्कारियों का साहस बढ़ जाता है। इसका एक ही उपाय है कि संसद, कानून और पुलिस में नारी को बराबर का प्रतिनिधित्व मिले। नारी कानून बनाए, सुरक्षा में भागीदारी हो और न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठे। तब जाकर इस समस्या से कुछ सीमा तक छुटकारा मिल सकता है।

नारी पर होने वाले बल-प्रयोग को प्रोत्साहन देने वाले कुछ अन्य कारण भी हैं। आज हर हाथ में मोबाइल है। मोबाइल में इंटरनेट है और इंटरनेट पर नाना कामुकतापूर्ण साइट्स हैं। इन पर किसी का नियंत्रण नहीं है। करोड़ों-करोड़ों युवक घर बैठे-बैठे इन्हीं आपत्तिजनक साइट्स को देखते-देखते विकृत हो जाते हैं। इन पर रोक लगाना बेहद जरूरी है। इनसे संबंधित प्रभावी कानून होने चाहिए। जब तक अबोध युवक-युवतियों को सही मार्गदर्शन नहीं दिया जाएगा तब तक यह दुराचार बढ़ता रहेगा। **[6]**

13. सेवा में,

प्रधानाचार्य,

दिल्ली पब्लिक स्कूल

शाहगंज, आगरा।

विषय- सर्वशिक्षा अभियान के प्रोत्साहन हेतु

महोदय,

सविनय निवेदन है कि सर्वशिक्षा अभियान के प्रोत्साहन हेतु विद्यालय में रात्रिकालीन शिक्षा केंद्र का संचालन करना चाहता हूँ। मैंने अपने प्रयास से प्रौढ़ों को शिक्षित करने के उद्देश्य से अपने विद्यालय के कुछ अन्य छात्रों को भी सहयोग के लिए चुना है। आशा है आप मुझे उपर्युक्त कार्य के लिए विद्यालय का एक कमरा सायं 7 बजे से 9 बजे तक के लिए निःशुल्क प्रदान करने की कृपा करेंगे। साथ ही चौकीदार को भी इस संबंध में निर्देश दें ताकि समय पर वह विद्यालय के कमरे को खोले व बंद कर सकें।

प्रार्थी

अ. ब. स.

कक्षा- दसवीं (ब)

दिनांक- ..... **[5]**

अथवा

सेवा में,

संपादक महोदय,

नवभारत टाइम्स,

नई दिल्ली।

विषय- बढ़ती मँहगाई पर सरकार का ध्यान आकर्षित करना।

मान्यवर,

मैं आपके लोकप्रिय व प्रतिष्ठित पत्र के माध्यम से बढ़ती मँहगाई की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। आशा है आप हमारी आवाज़ को समाचार-पत्र में छापकर सरकार तक पहुँचाने की कृपा करेंगे। आजकल दिन-प्रतिदिन खाद्य-पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि होती जा रही है, उसे रोकने के लिए अधिकारीगण कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। बेचारी जनता हाथ-पर-हाथ रखे बैठी रह जाती है, वह अपने को लाचार महसूस कर रही है। इस बढ़ती हुई मँहगाई से चारों ओर त्राहि-त्राहि मच रही है, सरकार भी खामोश है, विरोध पक्ष

की आवाज़ को भी वह दबाए बैठी है। ऐसी स्थिति में आप हमारी कठिनाई को ध्यान में रखते हुए सरकार तक हमारी आवाज़ पहुँचाने की कृपा करें। मैं आपका अत्यंत आभारी रहूँगा।

भवदीय

तनमय सिंघल

पॉकेट एफ- 29, सेक्टर - 8

रोहिणी, दिल्ली

दिनांक- .....

14.

दिल्ली पब्लिक स्कूल, शास्त्रीपुरम, आगरा

सूचना **दिनांक- .....**

वार्षिकोत्सव समारोह के आयोजन संबंधी बैठक

विद्यालय के समस्त शिक्षकों एवं स्कूल कैप्टन को सूचित किया जाता है कि 25.08.20.... को अपराह्न 2 बजे प्रधानाचार्य कक्ष में वार्षिकोत्सव समारोह के आयोजन संबंधी विषयों व कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श करने हेतु एक बैठक होगी जिसमें सभी की उपस्थिति अनिवार्य है।

डॉ. महेश भटनागर

(प्रधानाचार्य)

[5]

अथवा

होली पब्लिक स्कूल, आगरा

सूचना,

दिनांक- 12 मार्च 20....

परिचय पत्र गुम हो जाने संबंधी

विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि मेरा परिचय-पत्र विद्यालय परिसर में ही कहीं गिर गया है। परिचय-पत्र पर फोटो के साथ मेरा नाम, कक्षा 10वीं 'ए' तथा अनुक्रमांक 04 अंकित है। यदि किसी को भी यह मिले तो मुझे लौटाने की कृपा करें।

अनुराधा सिंह

कक्षा 10वीं 'ए'

15. **माँ-बेटा के बीच संवाद**

माँ - बेटा आज में तुम्हारे स्कूल गई थी

पुत्र - अच्छा

माँ - आपकी कक्षाध्यापिका आपकी शिकायत कर रही थीं कि आप कक्षा में बच्चों के साथ टी.वी. पर आने वाले धारावहिकों की बातें करते रहते हो।

पुत्र - हाँ माँ कभी-कभी बातें कर लेता हूँ।

माँ - बेटा टी.वी. देखना समय की बर्बादी है, इसमें समय बर्बाद करने से तुम्हे कोई लाभ नहीं होगा।

पुत्र - ठीक है माँ

माँ – अब अपना सारा ध्यान पढ़ाई पर लगाओ।

पुत्र – ठीक है आज से में अपना सारा ध्यान पढ़ाई पर लगाऊँगा, टी.वी. नहीं देखूँगा।

अथवा

दो मित्रों के बीच संवाद

मनीष – अरे ! राकेश स्कूटी लेकर कहाँ जा रहे हो, हेलमेट क्यों नहीं लगाया?

राकेश – अभी आया, नजदीक ही जा रहा हूँ

मनीष – अरे भाई दुर्घटनाएँ सूचना देकर नहीं घटतीं, तुमने कल ही देखा है कि हमारे पड़ोस में रहने वाले एक सज्जन का कितना भयंकर एक्सीडेन्ट हुआ है।

राकेश – तुम ठीक कहते हो मनीष कल तो पड़ोस में रहने वाले सज्जन का एक्सीडेंट देख कर हम सभी घबरा गए थे।

मनीष – हम सभी को सदैव यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए।

राकेश – सही कहा तुमने, हम सभी आए दिन सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं के बारे में सुनते हैं।

मनीष – लेकिन उनसे सीखते कुछ नहीं हैं और दुर्घटनाओं को स्वयं निमंत्रण देते हैं।

राकेश – अच्छा चलो मैं हेलमेट पहन कर जाता हूँ

मनीष – मेरे कहने से, या मेरे सामने पहनने से नहीं। हमें हमेशा सड़क पर चलने या यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए।

16.

वाहन बिक्री

बिकाऊ है:- एक सेंट्रो पुरानी कार

मॉडल नंबर UP90BF 20×× चलती हुई कंडीशन में

रंग–सफेद

पंजीकरण–यू.पी

कीमत मात्र– ₹1,80,000

मौके का लाभ उठाएँ–इच्छुक खरीददार तुरंत संपर्क करें–डॉ. प्रदीप चौहान, बोदला, आगरा

फोन नं–94083411××

[5]

अथवा

नटराज नृत्य प्रशिक्षण केंद्र

सभी प्रकार की नृत्य कलाओं (लोकनृत्य, सांस्कृतिक, पाश्चात्य आदि) के प्रशिक्षण हेतु विशिष्ट प्रशिक्षित प्रशिक्षिकों की व्यवस्था है। अपने अनुसार समय व दिन का चयन कर सामान्य शुल्क में उत्तम नृत्य–कला सीखें।

संपर्क करें – 9410234541

● ●